

Review Article

बर्नियर के यात्रा वृत्तांत में मुगल साम्राज्य की आर्थिक दशा

अनीता राठी¹ शालिनी²¹प्राचार्या, इस्माइल नेशनल महिला (पी०जी०) कॉलेज, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत²असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारतDOI: <https://doi.org/10.24321/2456.0510.202620>

I N F O

A B S T R A C T

Corresponding Author:

शालिनी, इतिहास विभाग चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

E-mail Id:

drshalini389@gmail.com

Orcid Id:

<https://orcid.org/0009-0009-9286-970X>

How to cite this article:

अनीता राठी, शालिनी, बर्नियर के यात्रा वृत्तांत में मुगल साम्राज्य की आर्थिक दशा, Anu: a, Mul, Int, Jour, 2026; 11(1&2): 54-57.

Date of Submission: 2026-05-25

Date of Acceptance: 2026-06-28

फ्रांसिसी यात्री बर्नियर 17वीं शताब्दी में शाहजहाँ के शासनकाल की अंतिम अवस्था में भारत यात्रा पर था। उसने अपनी पुस्तक ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर में तत्कालीन भारतीय समाज के विभिन्न पक्षों का रोचक विवरण दिया है प्रस्तुत शोध पत्र में हम बर्नियर द्वारा दी गई तत्कालीन मुगलकालीन अर्थव्यवस्था की विवेचना करेंगे। इस शोध पत्र में बर्नियर की दृष्टि में मुगलकालीन कृषि, व्यापार, कारखानों की स्थिति का वर्णन किया जायेगा। बर्नियर ने तत्कालीन मुगल प्रशासन के अंतर्गत कृषि व्यवस्था की दशा, कारखानों की कार्यप्रणाली पर जो प्रकाश डाला है उसका भी विश्लेषण किया जायेगा और यह भी जानने का प्रयास किया जायेगा कि उसने तत्कालीन आर्थिक स्थिति का जो वर्णन किया है क्या वो यथार्थवादी है या फिर उसने आलोचनात्मक दृष्टिकोण को अपनाया। इस शोध पत्र में इन सभी पहलुओं पर दृष्टिपात करेंगे।

मुख्य शब्द: बर्नियर, अर्थव्यवस्था, भूमि, बादशाह, मुगलकालीन

प्रस्तावना

फ्रांसिसी यात्री फ्रांस्वा बर्नियर 1656 ई० में भारत आया। वह पेशे से एक चिकित्सक था। उसने भारत में कुल 12 वर्ष व्यतीत किये बर्नियर ने तत्कालीन मुगलकालीन भारतीय समाज के धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक पक्षों का वर्णन अपनी पुस्तक ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर में किया है और उन्होंने यह पुस्तक तत्कालीन फ्रांसिसी सम्राट लुई चौदहवे को समर्पित की।¹ इस पुस्तक में बर्नियर ने मुगलकालीन अर्थव्यवस्था पर विशेष प्रकाश डाला है। उसने मुगल साम्राज्य की कृषि व्यवस्था के संदर्भ में भूमि स्वामित्व तथा निजी संपत्ति की अवधारणा पर भी अपने विचार रखे। वह कहता है कि

भारत में बादशाह ही संपत्ति का स्वामी होता है। उसके अनुसार अन्य कोई व्यक्ति चाहे वह कुलीन वर्ग का हो, जमींदार वर्ग का हो या किसान हो, बादशाह के अतिरिक्त अन्य कोई भी भूमि का स्वामी नहीं हो सकता। वह इसकी तुलना में फ्रांस से करते हुए कहता है कि फ्रांस में ऐसा नहीं होता है। फ्रांस में सम्राट भूमि का एकमात्र स्वामी नहीं होता। इस संदर्भ में समकालीन साक्ष्यों और विभिन्न इतिहासकारों द्वारा किये गये तुलनात्मक अध्ययन से यह समझा जा सकता है कि आखिर कृषि भूमि का स्वामी कौन था शासक अथवा जमींदार और अधिभोगी या रैय्यत (किसान)। दरअसल बर्नियर का यह कहना कि भारत में बादशाह ही भूमि का एकमात्र स्वामी होता है, उससे पूर्व के यूरोपीय विवरणों पर आधारित था क्योंकि जब हम औरंगजेब द्वारा रसिक दास एवं मोहम्मद हाशिम को दिये गये शाही फरमानों को देखते हैं जो औरंगजेब के भूमि स्वामित्व सम्बन्धी दृष्टिकोण को दर्शाते हैं, तो पाते हैं कि शाही फरमानों में भूमिका स्वामित्व किसानों को दिया गया है। इस शाही फरमान में प्रजा की संपत्ति पर लगने वाले कर का भू-राजस्व के रूप में उल्लेख किया गया है। संपत्ति पर जो कर लगाया जाता था। उसे 'तमगाह' तथा कृषि योग्य भूमि पर जो कर लगाया जाता था उसे 'माल' कहा जाता था।²

औरंगजेब द्वारा अपने भू-राजस्व अधिकारियों को जारी फरमानों द्वारा यह स्पष्ट है कि राजा ने किसानों के अधिभोग अधिकारों को तब तक नहीं छीना जब तक वो भूमि पर कृषि करते रहे, राजा को किसी कार्य हेतु यदि भूमि की आवश्यकता होती थी तो वह उसे खरीदता था न कि छीनता था। जैसे ताजमहल के निर्माण के लिए शाहजहाँ ने आमेर शासक से भूमि खरीदी थी। इसके अतिरिक्त बर्नियर द्वारा बादशाह को भूमि का एकमात्र स्वामी माने जाने की मान्यता उन्हें विशिष्ट शाही सदस्यों और अमीरों को उपाधियाँ प्रदान किये जाने को संभुता से जोड़ने के लिए प्रेरणा देती है। जैसे कि बर्नियर कहता भी है कि प्रसिद्ध लोगों को नूरजहाँ बेगम, नूरे मौहल्ला जैसी उपाधियों क्यों दी जाती है न कि जागीरदारों एवं सामंती अधिकारियों से प्राप्त उपाधियाँ। इसके पीछे यह कारण निहित है कि संपूर्ण साम्राज्य में भूमि को संप्रभु की ही मिल्कियत माना जाता है। शाही अनुदानों में मात्र पेंशन को शामिल किया जाता है चाहे वह धन के रूप में दी गई हो अथवा भूमि के रूप में, इसको राजा अपनी इच्छानुसार देता है, इच्छानुसार बढ़ाता है और इच्छानुसार ही घटाता है, और वापिस भी ले लेता है।³

इतिहासकार इरफान हबीब कहते हैं कि सच तो ये है कि मुगल शासकों का ध्यान केवल कृषि उत्पादन पर था न कि भूमि पर।⁴ वो कहते हैं कि इस बात का कोई साक्ष्य नहीं मिलता कि भूमि पर सामुदायिक स्वामित्व था और साथ ही साथ इस बात का भी कोई प्रमाण नहीं मिलता कि किसी से भूमि छीनकर किसी दूसरे को पुनर्वितरण किया गया हो या तो कोई भूमि का स्थायी स्वामी होता था या फिर उसके पास अधिभोग अधिकार ही था। ए०आर० कुलकर्णी अपनी पुस्तक 'द इंडियन विलेज' में दक्कन क्षेत्र के गाँवों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि दक्कन के गाँवों में भूमि का स्वामित्व न तो राज्य के पास था और न ही किसी समुदान विशेष के पास। बी०आर० ग्रोवर भी कहते हैं कि मुगल बादशाहों ने कभी भी कृषि भूमि पर पूर्ण स्वामित्व का दावा नहीं किया, बल्कि कृषि भूमि का स्वामित्व कृषकों के पास था। जिसे हस्तांतरित करने, गिरवी रखने अथवा बेचने का अधिकार भी उनके पास ही था। इसे आगे विस्तार करते हुए कहते हैं कि दरअसल मुगल साम्राज्य में जागीरों की हस्तांतरण व्यवस्था को यूरोपियों ने गलत समझा और इसी को आधार बनाकर उन्होंने राजा को भूमि का स्वामी बताया।⁵

कोलबर्ट के साथ किये गये पत्राचार में बर्नियर ने मुगल प्रशासनिक व्यवस्था, न्यायिक व्यवस्था और भ्रष्टाचार के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी है। न्याय व्यवस्था में फैले भ्रष्टाचार के विषय में बर्नियर कहता है कि केवल न्याय उन्हीं मुकदमों में सही ढंग से होता था जिनमें मुकदमा निम्न वर्ग के और समान रूप से गरीब लोगों का होता था, क्योंकि वे न तो न्यायाधीशों को घूस दे सकते थे न ही झूठे गवाह खरीद सकते थे।⁶

बर्नियर मुगल साम्राज्य में व्याप्त दमनकारी और शोषक स्वरूप का भी वर्णन करता है तथा बताता है कि कृषक राज्य के सूबेदारों, जमींदारों द्वारा लगातार परेशान किये जाते थे। जिन अधिकारियों को राजस्व संग्रह के अधिकार सौंपे गये थे वे भी निरंतर उन्हें सताया करते थे इस शोषण नीति से त्रस्त होकर कृषक ओर कारीगर अपनी भूमि व व्यवसाय का परित्याग कर अन्य स्थानों पर पलायन कर जाते थे। बर्नियर कहता भी है कि कृषि की बरबादी मुगल राजनीति की अन्तर्निहित प्रमुख विशेषताओं में से एक हैं औरंगजेब द्वारा रसिकदास व मुहम्मद हाशिम को जारी किये गये फरमानों में भी दमनकारी करधान प्रणाली के कारण कृषकों के पलायन का उल्लेख है। इन्हीं शोषणकारी नीतियों के कारण ही 1669 में गोकुल का विद्रोह तथा 1672 में सतनामी विद्रोह हुआ। इसी स्थिति को इरफान हबीब ने मुगल साम्राज्य के पतन में कृषि संकट के सिद्धांत के रूप में परिभाषित किया।⁷

बर्नियर ने मुगल साम्राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए बंगाल की समृद्धि को विशेष रूप से चिन्हित किया और बताया कि मुगल साम्राज्य की आर्थिक व्यवस्था में बंगाल का प्रमुख योगदान था। यहाँ की उपजाऊ मिट्टी में विभिन्न नगदी फसलों का उत्पादन होता था और यह सूबा सबसे अधिक राजस्व देने के लिए जाना जाता था। बर्नियर के अनुसार बंगाल में कपास, चीनी, चावल, रेशम आदि का उत्पादन प्रचुर मात्रा में होता था। बंगाल की खाड़ी में स्थित बंदरगाह दूसरे देशों से व्यापार में अहम भूमिका निभाते थे। आयात-निर्यात के प्रमुख अड्डे के रूप में विकसित होने के कारण भी बंगाल दुनिया के विभिन्न कोनों से मुगल साम्राज्य के लिए सोने के भंडार प्राप्त करने में सफल रहा। बर्नियर की नजर में बंगाल तत्कालीन मुगल साम्राज्य और अन्य देशों के लिए माल का एक भंडार गृह था।⁸

बर्नियर ने मुगलकालीन राजकीय कारखानों पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है कहता है कि भारत में कारखाने श्रम पर आधारित वेतन पर नहीं चलाये जाते, बल्कि बेगार पर चलाये जाते हैं।⁹ वह कहता है कि मजदूरों से जबरन कार्य करवाया जाता है और उन्हें वेतन भी नहीं दिया जाता। बर्नियर ने भारतीय शिल्पकला और कारखानों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है परंतु वह यह भी कहता है कि भारत में कारीगरों की स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती। राज्य द्वारा कारीगरों से कम वेतन पर काम करवाया जाता है। ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर में बर्नियर द्वारा दिया गया यह विवरण यूरोपियों को भारत में आर्थिक दृष्टिकोण के लिए प्रचुर मात्रा में आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराता है। एस० कुन्द्रा भी कहते हैं कि बर्नियर ने भारतीय भूगोल, राजनीति, आर्थिकी, आयात-निर्यात के बारे में जो जानकारी दी उसे यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों ने मॉडल के तौर पर अपनाया तथा निजी लाभ प्राप्त किये। वास्तव में बर्नियर पर मुगलों की अर्थव्यवस्था से प्रसन्न नहीं था, परंतु भारत की समृद्धि का भी एहसास उसे था वह कहता भी है कि भारत में धन आने के सौ दरवाजे हैं परंतु बाहर जाने का एक भी नहीं।¹⁰

निष्कर्ष

बर्नियर के मुगलकालीन अर्थ व्यवस्था के संदर्भ में दिये गये विवरणों से हमें ज्ञात होता है कि बर्नियर ने भारतीय कृषक को बहुत बुरी और शोचनीय दशा में पाया। वह राजा को समस्त भूमि का स्वामी बताता है शायद वह भूमि स्वामित्व को उसी प्रकार ठीक से जान ही नहीं पाया जिस प्रकार मेगस्थनीज भारत में दासता की प्रथा को होते हुए भी देख नहीं पाया था। बर्नियर ने अपने वर्णन में आलोचनात्मक रूप को अपनाया है। वह प्रत्येक वस्तु की तुलना फ्रांस से करता है तथा अपने वर्णन में फ्रांस की तुलना में भारत को कमतर दिखाने का प्रयास करता है। यद्यपि बर्नियर ने भारतीय समाज का वर्णन आलोचनात्मक स्वरूप में किया है तथापि इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि उसकी पुस्तक तत्कालीन मुगल समाज को जानने के लिए अत्यंत उपयोगी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. चौबे, सौरभ कुमार, मध्यकालीन भारत का इतिहास, यूनिवर्सल बुक्स इलाहाबाद, 2023, पृ०सं० 329।
2. बर्नियर, ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर, पृ०सं० 4।
3. वही, पृ०सं० 5
4. हबीब, इरफान, द एग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस इंडिया, 2013, पृ०सं० 65।
5. ग्रोवर, बी०आर०, द नेचर ऑफ लैंड राइट्स इन मुगल इंडिया पैम्प्ट जर्नल, टवसण 1ए भाग 1, 1963।
6. बर्नियर, ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर, पृ०सं० 438।
7. हबीब, इरफान, द एग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस इंडिया, 2013, पृ०सं० 113।
8. बर्नियर, ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर, पृ०सं० 365।
9. चौबे, सौरभ कुमार, मध्यकालीन भारत का इतिहास, यूनिवर्सल बुक्स, इलाहाबाद, 2023, पृ०सं० 329।
10. वही, पृ०सं० 402।